सरस्वतींदेवयन्तोहवन्ते''

जनार्दनराय नागरराजस्थानविद्यापीठउदयपुर

(जनशिक्षण एवंविस्तारकार्यक्रमनिदेशालय के अन्तर्गत संचालित)

जनपदमीडियासेन्टर

(Declared Under Section 3 of the UGCAct,1956 vide Notification No.F.9-5/84,dated 12.01.1987 of GOI)

कार्यालयः-टाऊनहॉलरोडउदयपुर (राज.)

Call: 0294-2420881 Fax: 0294-2420030 Email: Providyapeeth@gmail.com

नव आगंतुक छात्राध्यापकों का दीक्षारंभ समारोह का हुआ आयोजन
सर्वांगीण विकास के लिए शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक विकास जरूरी - प्रो. सारंगदेवोत

उदयपुर 18 अगस्त / राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के संघटक माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय के अंतर्गत संचालित शिक्षा संकाय के बीए बीएड, बीएसी बीएड के नव आगन्तुक छात्राध्यापकों के लिए आयोजित दीक्षारंभ समारोह का शुभारंभ सोमवार को महाविद्यालय के सभागार में कुलपति कर्नल प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत, कुलाधिपति भंवर लाल गुर्जर, प्रो. मलय पानेरी, डॉ. धमेन्द्र राजौरा, डॉ. सुनिता मुर्डिया ने मॉ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर किया।

प्रो. सारंगदेवोत ने नवप्रवेशित छात्राध्यापकों का आव्हान किया कि सर्वांगीण विकास के लिए शरीरिक , मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास जरूरी है। लक्ष्य निर्धारित, टाईम मैनेजमेंट, स्वयं के प्रति जिम्मेदार, आत्म अनुशासन के साथ जीवन में आगे बढ़ेगे तो जीवन में कभी असफल नहीं होंगे। जीवन में हमेशा सपने उंचे देखे और लक्ष्यों को छोटे छोटे टुकड़ों में बांट कर पूरा करने का प्रयास करें, लक्ष्य ही अगर छोटा होगा तो आप जीवने में कुछ नहीं कर सकते। उन्होंने कहा कि असफलता ही सफलता की पहली सीढ़ी है। संस्थापक जनुभाई कहा कहते थे कि कोई विद्यार्थी फेल होता है तो वह शिक्षक को फेल मानते थे, उनका मानना था कि शिक्षक में ही कोई कमी रही होगी जिसके कारण विद्यार्थी फेल हुआ है।

कुलाधिपति भंवर लाल गुर्जर ने कहा कि संस्थापक मनीषी पंडित नागर ने वंचित वर्ग को शिक्षा की अलख से जोड़ने के उद्देश्य से आजादी के 10 वर्ष पूर्व 1937 में राजस्थान विद्यापीठ की स्थापना की। जो सपना जनुभाई ने देखा था वह अब पूरा हो रहा है। उन्होंने विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य गतिविधियों में भी भाग लेने पर जोर दिया।

प्रारंभ में प्रभारी डॉ. सुनिता मुर्डिया ने अतिथियों का स्वागत करते हुए दीक्षारंभ समारोह की जानकारी दी।
पुस्तक का हुआ विमोचन:-

समारोह में अतिथियों द्वारा डॉ. ललित श्रीमाली द्वारा सम्पादित हिन्दी आलोचना की पुस्तक मेला आंचल स्वरूप और सरोकार का विमोचन किया गया।

संचालन डॉ. अर्पिता मट्ठा ने किया जबकि आभार डॉ. ललित श्रीमाली ने जताया।

इस अवसर पर डॉ. सौनल चैहान, डॉ. नीतू पंवार, डॉ. दर्शना दवे, डॉ. सरोज प्रजापत, ओजस्वी सारंगदेवोत, नलिनी सिंह चुंडावत, संजय भारद्वाज, डॉ. दीपक दशोरा, किरण जैन सहित विद्यार्थी उपथित थे।

कृष्णकांत कुमावत
निजी सचिव
9460632862